रिकॉर्ड :– नैनहीन को..... ओम् शांति। ये तो भक्तिमार्ग वाले हैं, जो परमपिता प० को पुकारते हैं कि हम (जो) बुद्धिहीन, नैनहीन हैं, उनको आए अपने साथ मिलने का मार्ग बताओ। अब तुम बच्चे मार्ग बताने वाले से मार्ग देख रहे हो। वो बाप राह बताए रहे हैं। तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। तुम देख रहे हो कि जो नैनहीन, बुद्धिहीन हैं वो भक्तिमार्ग में कितने धक्के खाए रहे हैं। तुमको बाप (ने) राह बताई है तो दर–2 धक्के खाने से बच गए हो। ये तुम्हारा प्रैक्टिकल अनुभव है। बाप भी कहते हैं– हे अंधे के औलाद अंधे। दिखलाते हैं, तुम हो रावण के औलाद। गीता भागवत में जो धृतराष्ट्र और युधिष्ठर दिखाया है, वो तो समझाया है। वास्तव में हैं सभी अंधे के औलाद। किसी बड़े आदमी को अंधा कहो तो गुस्सा लगेगा। इसलिए समझाया जाता है कि माया रावण ने सभी को अंधा बनाए दिया है। बाप आए ज्ञान का तीसरा नेत्र और ज्ञान का वरदान देते हैं। हम बच्चों की अब आँख खुली है। अब हम ऐसे नहीं कहेंगे कि हम नैनहीन हैं। हमको तो तीसरा नेत्र आए बुद्धि मिली है। बाबा ने रास्ता भी बताए दी है। बाप कहते हैं, मैं तुम सबको ले जाने लिए पंडा बनकर आया हूँ। सभी का मैं एक ही पंडा हूँ। वो जिस्मानी पंडे तो भिन्न–2 होते हैं। मैं सभी को साथ ले जाऊँगा। आया ही हूँ राह बताने; परन्तु जब तक पवित्र न बने हो, निर्वाणधाम कैसे जाए सकते हो। सन्यासी कह सकते हैं कि हम जाकर ज्योति ज्योत समावेंगे; क्योंकि वो निर्विकारी बनते हैं; परन्तु वे भी जाए नहीं सकते। सभी का सद्गति दाता पतित–पावन एक। तो ज़रूर उस एक को आना पड़े। अब तुम बच्चे मार्ग को जानते हो। कहाँ जाना होता है तो पूछते हैं ना– सुभाष मार्ग कहाँ है? अब सभी कहते हैं, हम अंधे हो गए हैं; बाबा, अपने परमधाम का मार्ग बताओ। तो बाप परमधाम जाने का सहज मार्ग बताते हैं। आधा कल्प तुम भक्ति करते आए; परन्तु मार्ग मिला नहीं। अब मैं तुमको मुक्ति–जीवनमुक्ति का मार्ग बताए रहा हूँ। तुम इन पाँच विकारों रूपी रावण द्वारा पत्थर बुद्धि बन पड़े हो। अब हम कह सकते हैं कि हम गति–सद्गति का मार्ग बताए सकते हैं, जिसको निर्वाणधाम और जीवनमुक्ति धाम कहा जाता है। दुर्गति को, नर्क को धाम नहीं कहेंगे। यह तो रौरव नर्क है। बाप परमधाम से आते हैं। बाप को क्रियेटर भी कहा जाता है। भाई को क्रियेटर नहीं कहेंगे। क्रियेटर एक बाप। तो परमपिता आते ही हैं स्वर्ग स्थापन करने। बाप कभी बच्चों को दुख के लिए क्रियेट नहीं करते। वो तो सुख के लिए क्रियेट करते हैं, तो उनको वर्सा दूँ। बच्चा बीमार होता है तो वो अपने पास्ट कर्मों अनुसार दुख भोगता है। बाकी बाप दुख देने लिए नहीं रचते। बच्चा बीमार, लंगड़ा, लूला, अंधा जन्मता है। अपने पास्ट कर्मों अनुसार दुख भोगता है। इस समय बाप, जो हमको जन्म दे रहे हैं अथवा मुखवंशावली बनाए रहे हैं; तो बाबा कहते हैं– अब मैं तुमको ऐसे कर्म सिखाता हूँ जो फिर 21 जन्म तुम कर्म कूटेंगे नहीं। लौकिक बाप जन्म देंगे तो भी तुम कब दुख नहीं देखेंगे। यहाँ तो अकाले मृत्यु भी होता है। मैं तुमको अब सभी कर्म भोग से छुड़ाता हूँ। भल पास्ट का हिसाब–किताब अब भोगना पड़ता है; परन्तु भविष्य 21 जन्म कोई दुख नहीं देखेंगे। एवर हेल्दी, एवर वेल्दी, एवर हैपी का वरदान देता हूँ। तो कितना फर्क है। यहाँ तो लौकिक बाप से जन्म लेते दुख पाते आते हैं। फिर कह देते हैं, ईश्वर ही दुख–सुख देता है। ये तो बेहद का बाप है। बेहद के बच्चे, जो मुखवंशावली बनाते हैं, उनको शिक्षा देते हैं कि तुम ऐसे गुणवान बनो। कल्प पहले भी मैंने तुमको ऐसा गुणवान बनाया था। सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमोधर्म का वर्सा अब मैं तुमको देता हूँ। अब जो जितना बाप से सीखेंगे, इतना पद पाएँगे, सुख भोगेंगे। कितनी अच्छी बात है! कोई भी समझ सकता है।

खास बाप हमारे लिए दुख नहीं रचता। दुख खुद हम अपने लिए रचते हैं। अब मैं तुमको ऐसी शिक्षा देता हूँ जो तुम कब दुखी न होंगे; परन्तु सीखना तो तुमको है। माया ही उल्टा काम कराती है। क्रोध वश किसको मारते वा नाक–कान काटते हैं तो दूसरे जन्म में लूल्ले–अंधे बनते हैं; परन्तु वहाँ माया ही नहीं तो ऐसे कर्म भी नहीं। अब तेरे पुरुषार्थ पर है, पढ़कर ऊँच नम्बर लो। 108 की नम्बरवार माला बनती है ना। स्कूल में भी बड़े–2 क्लास में जास्ती में जास्ती 100 स्टूडेंट्स होंगे। जास्ती नहीं बिठाएँगे। कॉलेज वा यूनिवर्सिटी में भी इतने ही 40–50 स्टूडेंट्स होते हैं। 100 से जास्ती नहीं होंगे। एक टीचर जास्ती को पढ़ाए न सके। यहाँ भी ऐसे है। हर एक क्लास अलग–2, देखो तो इतने ही होंगे। एक देहली में 10 क्लास हैं, भल वृद्धि को पाते जाते हैं। तो अलग–2 क्लास हैं। यह रजौरी का क्लास, यह सीताराम बजार का क्लास। तो हर एक में इतने ही स्टूडेंट्स होते हैं। सभी क्लास इकट्ठे तो नहीं पढ़ेंगे। क्लास में प्रश्न–उत्तर पढ़ाई, वो तो बहुत में चल न सके; इसलिए छोटे–2 क्लास हैं। सभी बच्चे समझते हैं कि हम स्टूडेंट्स हैं। गॉड हमको पढ़ाते हैं। यह तो बहुत सहज है– गीता का भगवान हमको पढ़ाते हैं, राजयोग सिखाते हैं। अब कृष्ण की आत्मा पतित दुनिया में कैसे आए पढ़ावेगी? उनको क्या गरज़ पड़ी है जो कलियुग में आए। ये तो अपन जानते हैं, द्वापर से कृष्ण की आत्मा भी काली देह में गिरती है। पूछते हैं, देवी–देवताएँ काली देह, विषय सागर में कब गिरे? बाप समझाते हैं, द्वापर आदि से, जब माया का राज्य आरंभ होता है। पहले द्वापरी देह में पड़ेंगे। क्यों? कलियुग को काली देह कहा जाता है। बाकी माया रावण द्वापर से प्रवेश होता है। माया भी पहले सतोप्रधान है, फिर तमोप्रधान बनती है। पहले माया इतना तंग नहीं करती, धीरे–2 दुख बढ़ता जाता है। अब देखो, क्राइस्ट आता है धर्म स्थापन करने, उस समय उनकी एक्ट चलती है, जिसको दिनचर्या कहे, गया तो खलास। बाद में बाइबल बनाया होगा। वैसे बाबा भी आया होगा तो उस समय की एक्टिंग होगी। ये गीता, भागवत, महाभारत तो सब बाद में द्वापर में बने हैं। हैं तो सब इस एक ही समय का गायन, जब गीता का भगवान आया है। अब वह पार्ट प्रैक्टिकल में चल रहा है। भगवान भी सुनावेंगे उनको, जिनको कल्प पहले सुनाया होगा। वो गीता तो जन्म–जन्मांतर सुनते आए हैं। अब हम गॉडली स्टूडेंट्स हैं। भगवान से हम शिक्षा पाए रहे हैं। वो गीता पढ़ने वाले ऐसे थोड़े ही कहेंगे, अब बाप ने समझाया है तो आँखें ही खुल गई हैं। वो तो गीता सुनते–2 फिर भी कहते राह दिखाओ। वो तो है भक्तिमार्ग। तो अब बाप कहते हैं, ऐसे अच्छे कर्म सीखो जो फिर कब दुख न देखेंगे। वहाँ यह ज्ञान न होगा। वहाँ तो अलबेले होंगे। कृष्ण को अलबेला कान कहते हैं ना। वहाँ है सुख की प्रालब्ध। तेरा है ऊँच ते ऊँच इम्तहान। तो यह बुद्धि में आना चाहिए ना कि हम डबल सिरताज बन रहे हैं। बाबा अपना अनुभव बताते हैं। सोता, चलता, फिरता हूँ तो यही याद रहता है कि हम गॉडली स्टूडेंट हैं। गॉड द्वारा पढ़ गॉड–गॉडेज़ बनेंगे। अगर यह निश्चय है तो सदैव खुशी रहनी चाहिए। फादर, जो स्वर्ग का रचता है, उनसे 21 जन्मों का वर्सा ले रहे हैं। स्टूडेंट को टीचर ज़रूर याद आवेगा। यहाँ तो बाप, टीचर, गुरु तीनों एक है। वो कैसे भूलना चाहिए; परन्तु वंडर है पढ़ाने वाला भूल जाता है! माया भुलाए देती है। अहो माया! तुम कितनी प्रबल हो! टीचर को याद करे तो वर्सा भी याद आए; परन्तु कितने बच्चे हैं, जो याद नहीं करते तो मुरझाए जाते हैं, नहीं तो खुशी का पारा कितना चढ़ना चाहिए। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। ॐ